श्रीनिवास बालभारती

धर्मराज

हिन्दी अनुवाद

डॉ. एस.टी. अरुण कुमारी

तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्
तिरुपति

श्रीनिवास बालभारती - 172

धर्मराज

तेलुगु मूल

डॉ. के.जे. कृष्णमूर्ति

हिन्दी अनुवाद

डॉ. एस.टी. अरुण कुमारी

तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्
तिरुपति
2015

Srinivasa Bala Bharati - 172
(Children Series)

DHARMARAJ

Telugu Version
Dr. K.J. Krishna Murthy

Hindi Translation
Dr. S.T. Aruna Kumari

T.T.D. Religious Publications Series No. 1120
©All Rights Reserved

First Edition - 2015

Copies : 5000

Price :

Published by
Dr. D. SAMBASIVA RAO, I.A.S.,
Executive Officer,
Tirumala Tirupati Devasthanams,
Tirupati.

D.T.P:
Office of the Editor-in-Chief
T.T.D, Tirupati.

Printed at :
Tirumala Tirupati Devasthanams Press,
Tirupati.

दो शब्द

बच्चों का हृदय सुमनों की भांति निर्मल होता है। उत्तम कपूर से बढ़कर सुवासित उन के दिलों में बढिया संस्कार पैदा करना है। यदि उन में हम अच्छे संस्कार डालते हैं तो चिरकाल तक आदर्श जीवन बिताने के लिए सुस्थिर नींव पड जाती है। बचपन में संस्कार प्राप्त बच्चे भावी पीढियों के लिए समुचित मार्ग दर्शन कर सकते हैं। इसलिए हमारे इन होनहार बच्चों के लिए हमारी विरासत बने पौराणिक मूल्यों तथा इतिहास में निहित मानवता के मूल्यों का परिचय कराना अत्यंत आवश्यक है।

बिना लक्ष्य का जीवन निष्फल होता है। बच्चों को लक्ष्य की ओर प्रेरित कर उनके जीवन को सही मार्ग पर ले जाने की जिम्मेदारी बडों के ऊपर है। महान व्यक्तियों की आदर्शमय जीवनियों का परिचय करा कर उनमें प्रेरणा जगाने के उद्देश्य से 'श्रीनिवास बालभारती' का शुभारंभ किया गया है।

इस योजना का मुख्य लक्ष्य नैतिक मूल्यों के माधुर्य के बच्चों तथा सर्वत्र फैलाने का है। हमें यह जानकर अत्यंत आनंद हो रहा है कि बच्चे तथा परिवार के सभी लोग इन पुस्तकों का स्वागत कर रहे हैं। इससे तिरुमल तिरुपति देवस्थानम् का मुख्य उद्देश्य कुछ हद तक सफल हो रहा है।

'श्रीनिवास बालभारती' की योजना तैयार करके उत्तम पुस्तकों का प्रकाशन करवा कर कम कीमत पर सब को उपलब्ध कराने का प्रयास, करनेवाले प्रो.एस.बी. रघुनाथाचार्य अभिनंदनीय हैं।

इस प्रकाशन में सहयोग देनेवाले लेखकों तथा कलाकारों के प्रति मैं अपना धन्यवाद अर्पित करता हूँ।

कार्यकारी अधिकारी
तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्, तिरुपति

प्राक्कथन

आज के बच्चे कल के नागरिक हैं। अगर वे बचपन में ही महोन्नत सज्जनों की जीवनियों के बारे में जानकारी लें, तो अपने भावी जीवन को उदात्त धरातल पर उज्ज्वल रूप से जीने के मौके को प्राप्त कर सकते हैं। उन महोन्नत सज्जनों के जीवन में घटित अनुभवों से हमारी भारतीय संस्कृति, जीवन में आचरणीय मूल धार्मिक सिद्धान्तों तथा नैतिक मूल्यों आदि को वे निश्चय ही सीख सकते हैं। आज की पाठशालाओं में इन विषयों को सिखाने की संभावना नहीं है।

उपरोक्त विषयों को ध्यान में रखकर तिरुमल तिरुपति देवस्थानम् के प्रचुरण विभाग ने डॉ.एस.बी. रघुनाथाचार्य के संपादन में स्थापित ''बाल भारती सीरीस'' के अन्तर्गत विविध लेखकों के द्वारा तेलुगु में रचित ऋषि-मुनियों व महोन्नत सज्जनों की जीवनियों से संबंधित लगभग १०० पुस्तिकाओं का प्रकाशन किया। इनका पाठकों ने समादर किया और इसी प्रोत्साहन से प्रेरित होकर अन्य भाषाओं में भी इन पुस्तिकाओं के प्रकाशन करने का निर्णय लिया गया। प्रारम्भिक तौर पर इनको अंग्रेजी व हिन्दी भाषाओं में प्रकाशित किया जा रहा है। इनके द्वारा बच्चे व जिज्ञासु पाठकों को अवश्य ही लाभ पहुँचेगा।

इन पुस्तिकाओं के प्रकाशन करने का उद्देश्य यही है कि बच्चे पढें और बडे लोग इनका अध्ययन कर, कहानियों के रूप में इनका वर्णन करें, तद्वारा बच्चों में सृजनात्मक शक्ति को बढा दें। फलस्वरूप बच्चों को अच्छे मार्ग पर चलने की प्रेरणा निश्चय ही बचपन में ही मिलेगी।

एडिटर-इन-चीफ

ति.ति.देवस्थानम्

स्वागत

श्रीनिवासदयोद्भूता बालानां स्फूर्तिदायिनी ।
भारती जयताल्लोके भारतीयगुणोज्ज्वला ।।

जब खण्डान्तरों में सभ्यता की बू तक नहीं थी तब भरतवर्ष अपनी सभ्यता, संस्कार,धर्म, नैतिकाचरण के लिए प्रसिद्ध हो गया था। जो इस पुण्य-भूमि पर जन्मता है वह धर्माचरण में स्थिर होकर अधर्म का सामना करता है और क्रमशः ईश्वराभिमुखी होकर यशोवान होता है। ऐसे महात्माओं के प्रभाव से हमारे जीवन इह-पर दोनों प्रकार लाभान्वित होते हैं। उनके आदर्शमय जीवनों से स्फूर्ति पाता है और समझता है कि मैं इस महान भारत का वारिस हूँ; परंपरागत इस संप्रदाय की रक्षा करना मेरा कर्तव्य है। ऐसी भावना से वह अपने देश की सेवा के लिए तैयार रहता है।

वास्तव में इस देश में कई धर्मात्मा, वीरपुरुष, वीरनारियाँ पैदा हुई उन्होंने संस्कृति की दृढ नींव डाली है। हमारा भाग्य यही है कि हमारी पैतृक-संपदा के रूप में उज्वल इतिहास की परंपरा है। उनके आदर्शों के पालन करने से ही कोई विद्यावान-विज्ञानी बन सकता है। राष्ट्र के जीवन प्रवाह में वही विज्ञान अचल रहकर जीवन को सुशोभित करता रहता है। इसी सिलासले को आगे बढाने के लिए महात्माओं के जीवनियों को संक्षिप्त रूप में आपके सामने रखता हूँ।

हे भारत के भाग्यदाता बालक-आइए-स्फूर्ति पाइए

एस.बी. रघुनाथाचार्य
प्रधान संपादक

परिचय

एक राजा अपने परिवार के साथ शिकार करने गया। जंगल के क्रूर जानवरों को मारने लगा। एक दिन राजा ने एक सपना देखा-जंगल के सभी पशु पक्षियों ने राजा से प्रार्थना की - ''तुम्हारे कारण हमारी सारी जातियाँ समाप्त हो रही हैं। कृपया हमें छोड़कर चले जाओ।'' राजा ने सपने में उन जानवरों की प्रार्थना को स्वीकार किया और उस जंगल को छोड़कर, दूसरे प्रांत में चला गया। ओह! कौन था वह धर्म मूर्ति? हमारे इतिहास में इतना धर्म-स्वभाव रखनेवाला महाराजा कौन है?

और कौन हो सकता है? अपने धर्म के लिए अपनी सारी संपदा एवं राज्य, अपने दयारहित रिश्तेदारों को छोड़कर, अपने भाइयों एवं पत्नी के साथ जंगलों में चले जानेवाला सहनशील, यम धर्मराज के अनुग्रह से उत्पन्न युधिष्ठिर है। इसीलिए इन्हें धर्मराज नाम से जानते हैं।

अनेक विपदाओं का सामना करके अपने भाइयों एवं पत्नी के साथ विराट राजा की सभा में अज्ञातवास करनेवाला यह व्यक्ति सहनशीलता का प्रतीक है। जब धर्मराज, कंकुभट नाम से विराट राजा की सभा में आश्रय लेते हैं, एक बार अपनी बात नहीं मानने से गुस्से में विराट राजा उन पर पासे फेंकता है। उनके सिर से खून निकलने लगता है, तो मालिनी अपनी आंचल से उसे पोंछती है और कहती है कि इस महान पुरुष के खून की जितनी बिंदु जमीन पर गिरती हैं उतने साल उस देश में वारिष नहीं होगी। लेकिन धर्मराज, विराट को कुछ भी नहीं कहते। उनकी सहनशीलता ऐसी थी।

महाप्रस्थान में जब इंद्र दिव्य रथ ले आते हैं और धर्मराज को स्वर्ग आने का आमंत्रण देते हैं तो वे कह देते हैं कि अपने साथ कुत्ते को भी रथ में ले जाएँगे दाब ही, वे आएँगे। उनकी दया इस प्रकार की थी। इतना सहनशील एवं दयावान व्यक्ति होने के कारण ही यह महापुरुष सशरीर स्वर्ग पहुँच सके।

धर्म देवता का अवतार इस धर्मराज के नाम स्मरण से हममें धार्मिक प्रवृत्ति उत्पन्न होती है। उनकी सहनशीलता एवं संयम इस समाज को जरूर प्रभावित करेगा।

- प्रधान संपादक

धर्मराज

किंदममुनि का शाप

हिमालयों में शतश्रृंग नामक पर्वत है। वह चारों ओर सौ पहाडों से घिरा सुंदर प्रदेश है। उस प्रदेश में देवी देवता एवं महान व्यक्ति विहार करते रहते हैं। एक राजा उस जगह के आस पास शिकार करने गया। उस दिन किंदम नाम का मुनि अपनी पत्नी के साथ हिरण का रूप ग्रहण करके, उस प्रदेश में विहार कर रहा था। राजा शिकार करते हुए अपने आप को भूल गया और उस हिरणों की जोड़ी को मार दिया। जब मादा और पुरुष जानवर साथ में हो उनका शिकार नहीं करना है- ऐसा शिकार का नियम है। इस नियम का उल्लंघन करके, मारने के लिए, मुनि ने मरते मरते राजा को शाप दिया कि ''अगर तुम अपनी पत्नी के पास दांपत्य सुख के लिए जाओगे तो तुम मर जाओगे!

धर्मदेवता की आराधना

राजा, मुनि के शाप से दुःखी हुआ और अपने परिवार को राजधानी में वापस भेजकर, पत्नियों के साथ, पास ही के शतश्रृंग पर्वत प्रदेश पहुँच गया। वहाँ उसने तीव्र तपस्या प्रारंभ की। वह राजा भरत वंशज था, उसका नाम था पांडुराज। कुंती एवं माद्री उसकी पत्नियाँ थीं।

पांडुराज चिंतित हो रहा था कि जितनी भी तपस्यायें करें, जिनके पुत्र नहीं होते उन्हें मृत्यु के बाद उत्तम लोक प्राप्त नहीं होंगे। उसकी बड़ी पत्नी कुंती ने अपने पति को छोटे उम्र में दूर्वास महामुनि द्वारा उपदेश और मंत्र की बात बताया। उस मंत्र के साथ बुलाने से कोई भी देवता आकर पुत्र प्रदान करेगा। यह सुनकर पांडुराज बहुत खुश हुआ और

कुंती से कहा कि ''चूँकि इस सारे संसार का आधार धर्म है, तुम धर्म देवता की पूजा करो और उनसे पुत्र प्राप्त करो।''

आकाशवाणी द्वारा प्रदत्त नाम

मंत्र के प्रभाव से धर्म देवता कुंती के सामने प्रत्यक्ष हुए और उसे वर प्रदान किया। ठीक एक साल बाद, शुभ मुहूर्त में, कुंती को महान तेजस्वी पुत्र पैदा हुआ। शतश्रृंग में रहने वाले ब्राह्मणों ने उस बच्चे का यथाविधि जातकर्म किया। उस समय आकाशवाणी ने जोर से कहा कि ''यह बालक धर्मदेवता के अंश से जन्म लेने के कारण धर्मात्मा बनेगा और कुरु वंश का राजा बनेगा। अमित धैर्य एवं साहस के कारण इसे युधिष्ठिर नाम से बुलाया जाएगा।'' उसी प्रकार वह बालक ''युधिष्ठिर एवं धर्मराज'' नाम से प्रसिद्ध हुआ।

कुछ दिनों के बाद कुंती को वायु देवता के वर से भीमसेन और देवेंद्र के वर से अर्जुन पैदा हुए। इसी तरह अश्विनी देवताओं के अनुग्रह से माद्री को नकुल, सहदेव नामक जुडवे पैदा हुए। पांडुराज के वे पाँच पुत्र 'पंचपांडव' नाम से प्रसिद्ध हुए। उन सबके बड़े भाई के रूप में धर्मराज बड़ा होने लगा।

पुत्रों के लिए

कुंती को भाई वसुदेव ने उन सब लोगों का कुशल मंगल पूछने कश्यप नाम के पुरोहित को भेजा। उस पुरोहित ने पांडवों का उपनयन किया और उन्हें वेद सिखाने लगा। इतने में वसंत ऋतु आई। एक दिन पांडुराज, अकेले में माद्री के पास गया और दांपत्य सुख प्राप्त किया। तुरंत मुनि के शाप के कारण पांडुराज की मृत्यु हो गई। पति के साथ माद्री ने सहगमन किया। बच्चों की देखभाल करने के लिए कुंती जीवित

रही। शतश्रृंग के ऋषियों ने उन्हें सांत्वना दिया और उन्हें हस्तिनापुर भेजा।

युवराज युधिष्ठिर

दादा भीष्म एवं ताऊ धृतराष्ट्र पांडुकुमारों को पिता की कमी महसूस होने नहीं दिया और उनका पालन करने लगे। पांडव, उत्तम गुरु कृपाचार्य एवं द्रोणाचार्य के पास, धृतराष्ट्र के पुत्रों के साथ सभी विद्याओं को अच्छी तरह सीखने लगे। धर्मराज सभी भाइयों में सर्वप्रथम रहकर, पिता से भी प्रख्यात पुत्र बनकर, प्रजा की प्रशंसा प्राप्त करने लगा। इसे देखकर धृतराष्ट्र ने युधिष्ठिर को युवराज बनाया।

विष और अग्नि से सावधान रहें

लेकिन ईर्ष्या से जलनेवाले दुर्योधन आदि कौरवों को यह अच्छा नहीं लगा। दुर्योधन ने अकेले में अपने पिता के पास अपनी चिंता व्यक्त की कि धर्मपुत्र को युवराज बनाने के कारण राज्य पांडवों के वश हो जाएगा और उसे और उसके वंशजों को हमेशा हमेशा के लिए पांडवों के दया-धर्म पर आधरित होना पडेगा। उस अंधे राजा ने अपने बेटे की इच्छा के मुताबिक धर्मराज को उसके परिवार के साथ काशी क्षेत्र भेजने के लिए राजी हुआ।

अपने ताऊ की इच्छा के मुताबिक धर्मराज, माँ एवं भाइयों के साथ काशी निकल पड़ा। नगरवासी धर्मराज को छोड़ न पाये और उनके साथ साथ निकल पड़े। धर्मराज के अनुरोध पर वे वापस अपने अपने घर पहुँच गए। उसके बाद विदुर थोड़ी दूर तक उनके साथ गया और विष एवं अग्नि से सावधान रहने के लिए, उन्हें सतर्क करके वापस चला गया।

लाक के घर में आग

धर्मराज वारणासी पहुँचकर कुछ दिन बाद एक नए भवन में प्रवेश किया। उस भवन का निर्माण दुर्योधन द्वारा भेजे गए शिल्पकार पुरोचन द्वारा किया गया था। उस भवन का निर्माण लाख और तेल से किया गया था। उसमें प्रवेश करते ही धर्मराज को यह बात मालूम हो गई। उसने अपने भाइयों को सतर्क किया कि देखने में सुंदर होने पर भी, भवन बहुत खतरनाक है। पांडव सुबह के समय शिकार करते, दानधर्म करते हुए रहने लगे। रात के समय अपने शस्त्रों को धारण करके पुरोचन पर एक नजर लगाकर सतर्क रहते थे। इस तरह लाक के घर में छः महीने बीत गए। विदुर ने सेवकों के जरिए गुप्त रूप में धर्मराज को जानकारी दी कि आगामी कृष्ण चतुर्दशी के दिन पुरोचन लाक के घर को जलानेवाला है। भूमि खोदने में निपुण उस सेवक ने लाक्षागृह के नीचे से रहस्य मार्ग बनाया। कृष्णचतुर्दशी के दिन पुरोचन के जागने से पहले भीमसेन ने लाक्षागृह में आग लगाई। सेवक को अपने निकल जाने की बात बताकर माँ और भाइयों को उठाकर गुफा मार्ग से गंगा तट तक पहुँचा।

महाराजाओं द्वारा भिक्षा याचन

पांडव गंगा किनारे बहुत दूर तक चलते गए। आगामी शुभ कार्यों के सूचक के रूप में भीमसेन ने हिडिंब नामक राक्षस को मारकर उसकी बहन हिडिंबी से विवाह किया। जब धर्मराज शालीहोत्र महर्षि के आश्रम में था, व्यास भगवान वहाँ पधारे, उन्हें सांत्वना दी और हितवचन सुनाकर गए। उनके कहानुसार धर्मराज और उसके भाई ब्राह्मण रूप धारण करके एकचक्रपुर नामक गाँव में भिक्षा याचन करके जीने लगे।

बक की पीड़ा से मुक्ति

उस गाँव के पास ही में यमुना के किनारे वन में बकासुर नामक राक्षस रहता था। उसे गाँववासी हर रोज एक बैल गाड़ी भरकर खाना, दो भैंस एवं एक मनुष्य खाने के रूप में भेजते थे। एक दिन उस ब्राह्मण की बारी आई जिसके घर में धर्मराज और उसके भाइयों को आश्रय मिला। कुंती एवं धर्मराज ने उस ब्राह्मण को आश्वस्थ किया और इस काम के लिए भीमसेन को भेजा। महा बलवान भीमसेन ने आराम से उस बकासुर का वध किया और उस गाँववासियों के दुःख को समाप्त कर दिया।

आपका शुभ होगा

पांडवों ने किसी अन्य गाँव के ब्राह्मण से सुना कि पांचाल देश बहुत ही संपन्न है, वहाँ का राजा द्रुपद बहुत धर्मात्मा है और उसने अपनी बेटी के स्वयंवर की घोषणा की है। तुरंत वे पांचाल देश के लिए निकल पडे। रास्ते में व्यास महर्षि मिले और उन्होंने कहा ''धर्मसुत जहाँ रहते हैं वहाँ धर्म की कमी नहीं होगी। आप लोग द्रुपद के राज्य में जाओ। आपका शुभ होगा।''

पति की भिक्षा दें

एक दिन आधी रात को पांडव गंगा स्नान करने निकले। अर्जुन मशाल लेकर आगे रास्ता दिखाते हुए चल रहा था। वह सोमश्रव नाम का घाट था। उस घाट में अंगारपर्ण नामक गंधर्व अपनी पत्नी समेत नहा रहा था। 'ऐसी रात के समय मानवों को यहाँ नहीं आना चाहिए' बोलकर गंधर्व ने अर्जुन को रोका। अर्जुन ने आग्नेय अस्त्र का प्रयोग किया तो अंगारपर्ण का रथ जल गया और वह नीचे गिर पड़ा। अर्जुन उसके बाल पकड़कर उसे भाई तक खींचता गया। अंगारपर्ण की पत्नी कुंभीनसा ने

अत्यंत दीन होकर धर्मराज से पति की भीख माँगी। दयावान धर्मनंदन ने तुरंत गंधर्व को छुड़वाया। दुःखी लोगों को देखकर करुणा से भर जानेवाला दयामय था धर्मतनय। अंगारपर्ण अर्जुन का दोस्त बना और उसे अनेक बातें बताई। उसी की सलाह पर पांडवों ने धौम्य नामक मुनि श्रेष्ठ को अपना पुरोहित बनाया।

कांपिल्य नगर झलक उठा

पांचाल देश की राजधानी कांपिल्य शहर स्वयंवर के लिए सज धज कर झलक रहा था। विविध देशों से अपने परिवारजनों के साथ पधारे राजा महाराजाओं से शहर भर गया। हर व्यक्ति के चेहरे पर एक नई जोश। धर्मराज चुपके से जाकर एक कुम्हार के घर में ठहरा। अगले दिन भाइयों के साथ स्वयंवर सभा में हाजिर हुआ। सभा देदीप्यमान होकर, सभी क्षत्रियों के तेज से मानो प्रकाशित हो रही थी।

परीक्षा में उत्तीर्ण पार्थ

हालाँकि वहाँ पर पधारे हुए सारे राजा धनुर्विद्या में निपुण थे, किंतु कोई भी द्रुपद द्वारा बनाए गए मत्स्य यंत्र को तोड़ न सके। भाई की अनुमति प्राप्त करके, बाह्मण समूह में प्रकाशमान अग्नि समान तेजोमय अर्जुन, आगे बढ़ा। वहाँ रखे गए धनुष को आराम से उठाया पाँच बाणों में मत्स्य यंत्र को तोड़ा और द्रुपद की परीक्षा में उत्तीर्ण हुआ। देव दुंदुभी बजने लगे और पुष्पों की वर्षा होने लगी, तब द्रौपदी ने अर्जुन के गले में पुष्पमाला डाला।

हस्तिनापुर पहुँचे पांडव

यह जानकर द्रुपद राजा बहुत खुश हुआ कि उसकी बेटी ने अर्जुन के गले में ही वह माला डाला है और पांडव लाक्षागृह में से बाहर निकल

गए। लेकिन जब पाँचो भाई लोक धर्म के विरुद्ध द्रौपदी से शादी करना चाह रहे थे तो द्रुपद सहमत नहीं हुआ। तब वेदव्यास वहाँ आया और द्रुपद को दिव्य दृष्टि प्रदान करके द्रौपदी एवं धर्मराज आदि पांडवों का पूर्व जन्म दिखाया। तब द्रुपद शादी के लिए राजी हुए। द्रौपदी का विवाह अत्यंत वैभव के साथ संपन्न हुआ। पांडव एक साल तक पांचाल देश की राजधानी में रहे। एक दिन विदुर वहाँ आए और धर्मराज को अपने ताऊ का निमंत्रण सुनाया। श्रीकृष्ण एवं द्रुपद के अनुमोदन लेकर धर्मराज अपने परिवार के साथ हस्तिनापुर पहुँचा।

नूतन राजधानी इंद्रप्रस्थ

धृतराष्ट्र ने अपने भाई के हिस्से के रूप में आधा राज्य धर्मराज को बाँटकर दिया। इस राज्य का पहले मुख्य शहर खांडवप्रस्थ था। इंद्र ने विश्वकर्मा को भेजकर धर्मराज के लिए एक नई राजधानी का निर्माण करवाया। चारों भाइयों की सहायता से धर्ममूर्ति युधिष्ठिर जनता को आनंद प्रदान करते हुए राज्य करने लगा।

नारद का सलाह

एक बार नारद धर्मराज के पास आया। उस महर्षि की बात मानकर भाइयों ने एक नियम बनाया। इसके अनुसार द्रौपदी एक-एक साल, एक-एक, भाई के साथ गृहस्थी करती उस समय बाकी भाइयों को उस घर में नहीं जाना है। अगर उस समय कोई और भाई उस घर में जाता है तो उसे १२ महीनें तीर्थयात्राओं पर जाना है।

बड़ेभाई के समान छोटा भाई

एक बार एक ब्राह्मण के गायों को चोरों ने चुरा लिया था। उन गायों को बचाने के लिए अर्जुन को उस घर में जाना पड़ा जहाँ धर्मराज और

द्रौपदी थे। गायों की रक्षा के बाद पार्थ तीर्थयात्रा पर जाना चाहा तो धर्मराज ने उसे मना किया। पर अर्जुन तीर्थयात्रा करके बड़े भाई के समान धर्म बद्ध बना। धर्मराज को द्रौपदी से प्रतिविंध्य नामक बेटा पैदा हुआ।

मयसभा निर्माण

अग्निदेवता एक बार बीमार हो गया, उनको खाना हजम नहीं हो रहा था। वे ब्रह्मा के पास गए। ब्रह्मा ने बताया कि औषधियों से भरे खाण्डव वन को जलाने से उसकी बीमारी समाप्त होगी। कृष्ण एवं अर्जुन की मदद से अग्निदेव खाण्डव वन को जलाने लगा। उस समय मय नामक राक्षसों का शिल्पकार वहाँ फँस गया। अर्जुन ने उसे अभय दिया और बचाया। उस कृतज्ञता से मय ने चित्र विचित्र भवन का निर्माण मणि माणिक्यों से किया और उसे धर्मराज को उपहार के रूप में दिया। धौम्य द्वारा निर्धारित मुहूर्त में युधिष्ठिर ने उस भवन में प्रवेश किया।

तुम्हें राजसूय याग करना है

एक बार नारद महर्षि स्वर्ग से सीधे धर्मराज के पास पहुँचे। धर्मराज ने उन्हें मयसभा की विचित्र बातें उसकी विशेषताएँ दिखाई। नारद ने प्रशंसा की कि सभा का सौंदर्य इंद्रादि देवताओं के भवनों से भी बढ़कर है। उस मुनि ने विविध दिशा पालकों की सभाओं का वर्णन करते हुए धर्मराज को बताया कि उनके पिता पांडुराज यम की सभा में हैं और वे वहाँ से इंद्र की सभा में जाना चाहते हैं। ''अगर तुम राजसूय यज्ञ करोगे तो तुम्हारे पिता की इच्छा पूरी होगी। यह बताने के लिए ही मैं यहाँ आया हूँ'' कहकर नारद चले गए।

यह वीरों का धर्म है

राजसूय यज्ञ करनेवाले राजा को विश्व के सभी राजाओं के साथ युद्ध करना पड़ेगा। उन युद्धों में अनेक लोगों की मृत्यु होगी। अनेक राजाओं को जीतना होगा। बिना कारण प्राणियों के वध के लिए धर्मराज हिचकिचा रहे थे। लेकिन श्रीकृष्ण और धौम्य ने धर्मराज को प्रोत्साहित किया कि राजसूय याग दुष्ट एवं निरंकुश राजाओं को हटाकर प्रजा की रक्षा के लिए है। तब धर्मराज मान गए और राजसूय करने का निर्णय लिया गया।

चारों दिशाओं में चार

सबसे पहले श्रीकृष्ण की प्रेरणा से भीम ने मगध देश के राजा जरासंध को मारा। उसके कैद में भैरव की पूजा में वध के लिए बंदी बनाए गए अनेक देशों के राजा धर्मराज के कारण विमुक्त हो गए। वे सब धर्मराज की प्रशंसा करते हुए अपने अपने देश पहुँच गए। धर्मराज के चारों भाई, चार दिशाओं में जाकर दिग्विजय प्राप्त करके, अधीनता को स्वीकार करनेवाले राजाओं को उपहार और धन आदि लेकर इंद्रप्रस्थ पहुँचे।

चक्र का प्रयोग

राजसूय याग निर्विघ्न रूप से संपन्न हुआ। अंतिम दिन भीष्म के सुझाव के मुताबिक धर्मराज ने श्रीकृष्ण को सभाध्यक्ष बनाकर, उसकी पूजा की। चेदि राजा शिशुपाल ने आक्षेप लगाया कि श्रीकृष्ण ऐसी मर्यादा के लिए पात्र नहीं है और इससे सभा में उपस्थित सभी बुजुर्गों का अपमान हुआ है। शिशुपाल श्रीकृष्ण की निंदा लगातार करता रहा,

तब श्रीकृष्ण ने शिशुपाल का सिर अपने सुदर्शन चक्र से काट दिया। उसकी आत्मा सभा के सभी सदस्यों के सामने श्रीकृष्ण में समा गई।

सावधानी से प्रजा का पालन करो

यज्ञ पूरा करने के बाद युधिष्ठिर पवित्र शोभा में प्रकाशमान था। विविध राज्यों से पधारे राजा उनसे विदा लेकर अपनी अपनी राजधानी के लिए निकले। कृष्ण ने धर्मराज को सतर्क किया कि 'सावधानी से प्रजा का पालन करो' और रथ में द्वारका के लिए निकल पडे। सभी रिश्तेदारों के चले जाने के बाद भी मय सभा की विशेषताएँ पूरी तरह देखने के लिए दुर्योधन कुछ और दिनों तक वहाँ रुक गया।

अपमान में दुःखी हुआ

एक दिन दुर्योधन उस मंदिर में चल रहा था और संगमरमर से बने तालाब को सामान्य जमीन सोचकर पाँव रखा और उसमें गिर गया। उसे देखकर भीम हँसने लगा। धर्मराज के द्वारा भेजे गए सेवकों ने दुर्योधन को नए वस्त्र भेजा। उन्हें पहनकर आगे बढ़ते हुए बंद दरवाजे को खुला हुआ समझकर, उसे जा टकराया। उसे ऊपर से देखकर द्रौपदी और उसकी सहेलियाँ हँसी रोक न पाईं और हँसने लगीं। धर्मराज के ऐश्वर्य को देखकर अंदर ही अंदर ईर्ष्या से जल रहे सुयोधन में यह अपमान अत्यंत ईर्ष्या और क्रोध से भर दिया।

दुर्योधन की बुरी सोच

दुर्योधन ने हस्तिनापुर जाते ही धर्मनंदन की संपदा को हराने के लिए गलत उपाय सोचा। उसके मामा शकुनी ने कहा कि ज्यूत क्रीडा उसके लिए अच्छा तरीका है। वे दोनों धृतराष्ट्र के पास गए और पासा खेलने के लिए धर्मराज को हस्तिनापुर बुलाने के लिए उन्हें राजी किया।

धृतराष्ट्र को उसके मंत्री विदुर ने समझाने की कोशिश की कि पासा खेलने के लिए बेटों को उकसाना ठीक बात नहीं है। लेकिन अंधे राजा ने अपने बेटे के प्रति प्रेम में मंत्री के सलाह पर ध्यान नहीं दिया। और धर्मराज को ले आने विदुर को ही भेजा। विदुर ने इंद्रप्रस्थ जाकर युधिष्ठिर को निमंत्रण दिया। ताऊ के निमंत्रण को स्वीकार करके धर्मराज सपरिवार हस्तिनापुर पहुँचा। ताऊ की नई सभा को देखकर, उसकी शिल्पकला से आनंदित हुआ।

सब कुछ हार गया

उस नए भवन में पासा खेलने के लिए दुर्योधन ने प्यार से धर्मराज को आमंत्रण दिया। ''अपनी ओर से शकुनी खेलेगा और वह जो भी हारेगी उसे मैं खुद दूँगा''- इस तरह से दुर्योधन ने कहा। कुरु वंश के बुजुर्गों, गुरुजनों एवं वयोवृद्धों के बीच सभा में पासे का खेल प्रारंभ हुआ। पासे की विद्या में प्रवीण शकुनी के हाथों धर्मराज लगातार अपना सब कुछ, अपने भाई और अंत में द्रौपदी को भी दावे पर लगाया और हार गया।

तुम्हारे हाथों को जला देना है

दुर्योधन ने प्रातिकामी नामक सेवक को द्रौपदी को ले आने के लिए भेजा। उसने स्थिति की पूरी जानकारी सविनय द्रौपदी को देकर, उसे सभा में ले आया। सभा में प्रवेश करने के लिए हिचकते हुए दूर खड़ी द्रौपदी को बालों से खींचकर दुःशासन जबरदस्ती अंदर ले आया। उसे देखकर भीमसेन अपमान को सहन नहीं कर पाया। उसने गुस्से में भाई की ओर देखकर कहा - ''यह जानते हुए कि शकुनी चालाकी से पासा खेल रहा है, तुमने उसमें भाग लिया और धर्म के विरुद्ध आचरण किया,

इसलिए तुम्हारे हाथों को जला देना है।'' अर्जुन ने भीमसेन को समझाया कि ''धर्मनंदन ने धर्म का अतिक्रमण नहीं किया, पासा एवं युद्ध के लिए निमंत्रण प्राप्त होने पर उसमें शामिल होना उत्तम क्षत्रिय का धर्म है। दूसरों के धोखे के लिए उन्हें निंदा देना उचित नहीं है। अगर धर्मराज धर्म का उल्लंघन करेंगे तो यह भूमंडल अस्त-व्यस्त हो जाएगा।''

जल्द ही फल भुगतेंगे

दुर्योधन ने अपने भाई को आदेश दिया कि वह द्रौपदी के वस्त्रों का अपहरण करे। भाई जैसा ही क्रूर दुःशासन उस गलत काम के लिए सन्नद्ध हुआ। श्रीकृष्ण के अनुग्रह से द्रौपदी के वस्त्र अनंत अक्षय में बदल गए और दुःशासन उसे खींच न पाया। इस तरह सभा में दौपदी की इज्जत बची। द्रौपदी ने पूछा ''बुजुर्गों, यह मेरा इस तरह अपमान कर रहा है और तुम लोग चुपचाप देख रहे हो। कोई क्यों नहीं बोलता, क्या मैं दासी हूँ? या नहीं?'' तब भीष्म ने कहा ''बेटी, इस सभा में तुम्हारे प्रश्न का जवाब दे पानेवाला धर्मज्ञ केवल धर्मराज हैं। तुम्हें अपमानित करनेवाले कुलनाशक ये कौरव जल्द ही इसका फल भुगतेंगे।''

फिर से हार गया

धृतराष्ट्र अपने बेटे की गलती समझ गया और द्रौपदी को पास बुलाकर उसके इच्छानुसार पांडवों को दास्यता से मुक्त करके उनका राज्य उन्हें वापस दे दिया।

उसके बाद अंधे राजा ने फिर से बेटे के प्रोत्साहन से धर्मराज को पासे के खेल के लिए बुलाया। ताऊ की बात को हटा न पाते हुए धर्मराज फिर हस्तिनापुर आया। इस बार के पासे के खेल में शकुनी ने एक विचित्र दावा रखा। उसके मुताबिक हारने वाले व्यक्ति को जूट के

वस्त्र पहनकर १२ साल का अरण्यवास और एक साल का अज्ञातवास करना है। अज्ञातवास के समय पकडे जाने से, उस दिन से फिर अरण्यवास को प्रांरभ करना है। धर्मराज ने यह नियम स्वीकार किया। लेकिन दुर्भाग्य से पासे के खेल में निपुण शकुनी के हाथों वह फिर से हार गया।

धर्म ही चला गया

चूँकि कुंती वृद्धा थी और वनवास सहन नहीं कर सकती, विदुर ने अनुरोध किया कि उसे अपने घर में छोड दें। धर्मराज बहुत खुश हुआ और उसे स्वीकार किया। माता को प्रणाम करके, उसका आशीर्वचन प्राप्त करके धर्मराज, अपने भाइयों और द्रौपदी के साथ वनवास के लिए निकला। कौरवों के कपट के कारण वनवास करना पड़ रहा है, यह सोचकर क्रोध एवं दुःख से धर्मराज की आँखें लाल हो गई। अपनी तीक्ष्ण दृष्टि से देखने से मानव जाति का अपकार होगा, यह सोचकर धर्मराज ने अपना चेहरा कपड़े में ओढ़ लिया। भरत वंशियों की राजधानी से मानो धर्म ही वनवास के लिए चला जा रहा हो, ऐसा प्रतीत हो रहा था।

अरुण का अनुग्रह - अक्षय भांड

धर्म प्रभु धर्मराज के प्रति अन्याय करनेवाले कौरवों के शासन में रहना पसंद न करते हुए अनेक लोग अपने परिवारों के साथ, पांडवों के पीछे जंगलों में निकल पडे। पुरोहित के उपदेश के अनुसार सूर्य भगवान की पूजा करके धर्मराज ने अक्षय भांड प्राप्त किया। उसकी सहायता से अपने साथ आए सभी लोगों को खिलाते हुए जंगलों में भी युधिष्ठिर महाराज की तरह ही जीने लगा।

किम्मीर मर गया

एक बार रात में काम्यवन में प्रवेश करते समय किम्मीर नामक राक्षस ने उनको रोका। वह बकासुर का भाई था। उसको भी भीम ने मारा। इस जंगल में रहते समय श्रीकृष्ण, द्रुष्टद्युम्न आदि रिश्तेदारों ने पांडवों के पास जाकर उनका कुशलमंगल पूछा। श्रीकृष्ण अपने भांजे अभिमन्यू को द्वारका ले गया। द्रुष्टद्युम्न, अपने पाँच भाँजों, उपपंडवों को अपने साथ लेकर पांचाल राज्य चला गया।

धर्म ही सुख देता है

उसके बाद धर्मराज द्वैतवन पहुँचा। वहाँ वृक्षों की छाया में निवास बनाकर वे जीवन यापन कर रहे थे। एक बार द्रौपदी दुःखी हुई और उसने अपने कष्टों को याद करके ब्रह्म देव की, उसकी विपरीत धर्मपद्धति की, निंदा की। धर्मराज ने द्रौपदी को समझाया कि भगवान की निंदा करना और धर्म का अपमान करना गलत है। शाश्वत सुख देनेवाला धर्मयुक्त जीवन यापन है।

दिया हुआ वचन भूल नहीं पाऊँगा

''तेरह साल के लिए तेरह महीने गुजर गए। इसलिए शत्रुओं के साथ युद्ध करके अपना राज्य प्राप्त करने का प्रयत्न करना धर्म ही है'' भीम द्वारा ऐसे कहे जाने पर धर्मराज ने कहा कि ''सारा साम्राज्य एक सत्य पूर्ण वाक्य के बराबर नहीं है। मैं किसी भी हालत में दिया हुआ वचन नहीं भूलूँगा।''

प्रतिस्मृति विद्या

व्यास ने धर्मराज को प्रतिस्मृति विद्या का उपदेश दिया। इससे अर्जुन इंद्रादि देवताओं की आराधना करके दिव्य अस्त्रों को प्राप्त कर

सकता है - ऐसा उन्होंने कहा। व्यास ने यह भी बताया कि अरण्यवास में एक ही जगह पर ज्यादा दिन रहना ठीक नहीं है। इसलिए धर्मराज ने अपना निवास काम्यवन के सरस्वती तट को बदला। अर्जुन ने अपने भाई से प्रतिस्मृति विद्या स्वीकार की और दिव्यास्त्रों को प्राप्त करने के लिए धनुष बाण लेकर हिमालयों के जंगलों में चला गया।

बृहदश्व नामक मुनि धर्मराज के पास आया। विधिवत उनकी पूजा करने के बाद धर्मराज ने कहा ''मुनिवर, हमारे जैसे राज्यों को खोकर जंगलों में भटकनेवाले और कोई हैं क्या?'' इस तरह उन्होंने अपनी दुःखद दशा मुनि को समझायी। उसके उत्तर में मुनि ने नल महाराज की कहानी सुनाकर कहा कि ''तुम भी नल महाराज की तरह शत्रुओं को जीतकर, अपना राज्य प्राप्त करोगे।'' इस तरह मुनि ने धर्मराज को सांत्वना दिया और उसे आशीर्वाद देकर चला गया।

इंद्र का आतिथ्य

इंद्र लोक से आकर रोमस नामक मुनि ने अर्जुन के बारे में पांडवों को बताया। उन्होंने कहा कि ''अर्जुन ने शिवजी को प्रसन्न करके पाशुपतास्त्र प्राप्त किया है। फिलहाल वह इंद्र की सभा में अतिथि बनकर अमरावती में है।'' यह सुनकर धर्मराज बहुत खुश हुए।

रोमस महर्षि को साथ लेकर धर्मराज सपरिवार पुण्य क्षेत्रों के दर्शन हेतु निकल पडे। उन पुण्य क्षेत्रों को देखते हुए, उनसे संबंधित अनेक कहानियाँ सुनते हुए, कुछ समय बाद बद्रिकाश्रम पहुँचे।

अर्जुन की प्रतीक्षा करते हुए, कुछ ब्राह्मणों को लेकर, धर्मराज मूल्यवंत नामक पहाड़ प्रदेश पहुँचे। उस पहाड के ऊपर कुबेर का निवास था। कुबेर की सलाह पर धर्मराज उसी के समीप एक ऋषि के आश्रम

में रहने लगा। एक दिन अर्जुन इंद्र के रथ में देव लोक से वापस आया और भाई से मिला। अपने विजय की बातें सुनाकर अर्जुन ने सबको खुश किया। रोमस धर्मराज को लेकर इंद्रलोक चला गया।

नहुष का शाप समाप्त

पांडव हिमालयों में नीचे आकर उसके आस पास के पुण्यक्षेत्रों को देख रहे थे। धर्मराज के तीर्थयात्रा पर निकलकर एक साल पूरा हो रहा था। एक दिन शिकार पर गए भीमसेन को एक अजगर ने पकड लिया। धर्मराज अपने भाई को ढूँढते उसके पदचिह्नों को देखते हुए वहाँ पहुँचा। उस अजगर के प्रश्नों का उत्तर धर्म के बलबूते देते हुए, अपने भाई को छुड़वाकर धर्मराज वापस आए। उस अजगर का शाप समाप्त हुआ और वह नहुष नामक महाराज बन गया। नहुष, धर्मराज के वंश का पूर्वज था। उससे धर्मराज ने अनेक वेदांत संबंधी रहस्यों को सीखा। उसके बाद सपरिवार काम्यवन में स्थित अपने निवास पहुँचा।

अगर तुम नाराज होगे

श्रीकृष्ण, सत्यभामा को लेकर पांडवों के पास आया। धर्मराज को नमस्कार करके उनका इस प्रकार गुणगान किया - ''कौरवों के कष्टों को सहने का धैर्य-साहस, धर्म के प्रति आस्था सिर्फ तुझमें ही है। अगर तुम नाराज होते तो तुम्हारे सारे शत्रु नष्ट हो जाते। सिर्फ तुम सार्थक नाम प्राप्त हो, तीनों लोकों में पूजनीय हो।''

उस समय महा तपस्वी, दीर्घायू मार्कंडेय महर्षि वहाँ आए। अतिथि पूजा और कुशल-मंगल पूछने के बाद, वे पांडवों को शुभ प्राप्त होने के लिए परमपुण्य कहानियाँ सुनाने लगे। उस विज्ञान के निधि महामुनि के

पास धर्मराज ने अनेक कहानियाँ सुनी। एक दिन महर्षि को विदा करने के बाद, धर्मराज फिर द्वैत वन के लिए निकल पडा।

किया जानेवाला कार्य गंधर्वों ने किया

वनों में अपने गायों को क्रूर जानवरों से बचाने के बहाने दुर्योधन, अपने रिश्तेदारों, मित्रों और अपार सेना लेकर द्वैतवन के पास, पांडवों के निवास के निकट, अपना ढेरा लगाया। उसके पास के एक तालाब में अपने और अपनी रानियों के नहाने के लिए तैयारियाँ करने के लिए, दुर्योधन ने आज्ञा दी। वह तालाब चित्रसेन नामक एक गांधर्व राजा का था। इसलिए वहाँ चित्रसेन के सेवकों ने, सुयोधन के सैनिकों को रोका। धीरे से कौरवों एवं गंधर्वों के बीच युद्ध शुरू हुआ।

चित्रसेन ने दुर्योधन, उसकी रानियों, दुःशासन आदि उसके भाइयों को बंदी बनाकर गंधर्व लोक ले जा रहा था। बाकी कुछ कौरव और सेवक भागकर धर्मराज के पास पहुँचे और उनसे विनती की। यह सुनकर भीम खुश हुआ और हँसते हुए बोला ''जो काम होना था उसे गंधर्वों ने पूरा किया और हमारे काम को कम किया।

फिर कभी ऐसा मत करना

धर्मराज, भीम की बातों से सहमत नहीं था। उसने कहा ''अगर हमारे बीच विरोध है तो हम पाँच हैं और कौरव सौ। लेकिन अगर हमारे लोगों पर कोई और हमला करता है तो हमें एक सौ पाँच होकर खड़ा होना है। ''एकता ज्ञान दिलाकर शरण में आये लोगों की रक्षा करना है'', इस धर्म को याद दिलाकर चारों भाइयों को उनके साथ भेजा। भीम और अर्जुन के हाथों गंधर्व बुरी तरह हार गए। चित्रसेन धर्मराज के पास

आया और बंदियों को उन्हें सौंपकर चला गया। धर्मराज की दया से दुर्योधन अपने परिवार के साथ बंधन मुक्त हुआ। आगे से इस तरह के साहस न करने और जो हुआ उसके लिए चिंता न करने के लिए दुर्योधन को समझाकर, धर्मनंदन ने उन्हें भेज दिया।

प्राणों से छोड़ दो

दुर्योधन का साला, सिंधु देश का राजा जयद्रथ उस जंगल से जा रहा था जहाँ पांडव निवास कर रहे थे। उसने द्रौपदी को देखा। उस समय पांडव शिकार के लिए गए थे। इसलिए उसने जबरदस्ती द्रौपदी को अपने रथ में डालकर जाने लगा। कुछ समय बाद पांडव आश्रम में लौटे। दासी से समाचार सुनकर, जल्दी से गए और जयद्रथ को बंदी बनाया। धर्मराज ने अपने भाइयों से कहा कि ''सैंधव मारने योग्य ही है, पर अपनी बहन दुस्सला के बारे में सोचकर उसे प्राणों से छोड़ दो।'' भीमसेन ने उसका आधा अधूरा मुंडन किया और उससे ''पांडवदास हूँ'' कहलाकर उसे छोड़ दिया। इस तरह खुद को अपकार करनेवाले दुष्टों का भी, इतना उपकार करना जिसकी हम कल्पना तक नहीं कर सकते, सिर्फ धर्मराज के लिए ही साध्य है। इसीलिए उस महाराज को ''अजातशत्रु'' का नाम सार्थक हुआ।

दूसरे वन में जाइए

धर्मराज का दया गुण सिर्फ मानवों तक सीमित नहीं था। एक दिन वन के जानवर उनके सपने में आए और अत्यंत दीन होकर प्रार्थना की ''आपके शिकार के कारण हमारी जातियाँ समाप्त हो रही हैं, कृपया आप दूसरे वन में जाइए।'' उस करुणामय ने उन्हें अभय दिया और अपना निवास दूसरी जगह बदला।

चारों गिर गए

पांडवों का वनवास पूरा हो रहा था। धर्मराज के पास एक ब्राह्मण आया और कहा कि ''एक हिरण मेरा 'अरणि' लेकर भाग गया। उसे मुझे दिलाओ।'' ब्राह्मण की प्रार्थना पूरा करने धर्मराज वन में गया। बहुत दूर भाग कर देखने पर भी वह हिरण पांडवों को नहीं मिला। पाँचों पांडव थक गए। धर्मराज ने नकुल को बुलाया और आस पास के तालाब से पानी ले आने के लिए कहा। नकुल बहुत देर तक नहीं लौटा तो उसने सहदेव को भेजा। जब दोनों नहीं लौटे तो अर्जुन को भेजा। कोई भी वापस नहीं आए तो भीमसेन को भेजा। अंत में उन सबको ढूँढते धर्मराज खुद निकला। वहाँ के दृश्य को देखकर धर्मराज दुःखी और आश्चर्य चकित हो गया। चारों भाई तालाब के तट पर निष्प्राण पडे हुए थे।

यक्ष के प्रश्न

पहले प्यास बुझाने के लिए धर्मराज पानी में उतरे। तब एक भयानक यक्ष सामने आया और कहा - ''यह तालाब मेरा है, मेरे प्रश्नों का ठीक उत्तर देकर ही यहाँ का पानी पी सकते हैं। तुम्हारे भाइयों ने मेरी बात नहीं मानी और पानी पी लिया। इसीलिए गिर गए हैं।'' इसे सुनकर धर्मराज समझ गया कि वह केवल यक्ष नहीं है। उसने कहा ''महात्मा, मैं अपनी ओर से जवाब देने की कोशिश करूँगा, आप प्रश्न पूछें।'' भगवान की सृष्टि, लोक नीति, धर्म की पद्धति के बारे में यक्ष ने अनेक प्रश्न पूछे। धर्मराज ने सबका समुचित जवाब दिया।

धर्म का बल ही महान है

यक्ष धर्मनंदन के जवाबों से खुश था। उसने कहा 'तुम्हारे भाइयों में एक को ही जीवन दूँगा, माँग लो' कुंती के पुत्रों में स्वयं जीवित होने के

कारण,न्याय सम्मत पद्धति में माद्री के बडे पुत्र नकुल को जीवित बनाने के लिए धर्मराज ने प्रार्थना की। धर्मराज की धर्म बुद्धि से खुश होकर यक्ष ने चारों को जीवित किया। इसी घटना से सिद्ध होता है कि युधिष्ठिर का धर्म-बल, उसके भाइयों के बाहुबल से महान है।

कोई पहचान नहीं पायेगा

पांडवों की परीक्षा लेनेवाला वह यक्ष और कोई नहीं धर्मदेवता ही थे, जिनके वर से धर्मराज ने कुंती के पुत्र के रूप में जन्म लिया। धर्मदेवता ने ही हिरण के रूप में आकर ब्राह्मण का अरणि चुराया और यक्ष के रूप में प्रश्न पूछा। उसने पांडवों को वर दिया कि 'चाहे वे किसी भी रूप में रहें उन्हें कोई पहचान नहीं पायेगा।'

विराट की सभा में असाधारण संत

पांडव वन मार्गों से चलते मत्स्य देश की राजधानी के पास पहुँचे। शहर से बाहर एक शमी वृक्ष पर अपने आयुधों को बांधकर रखा। धर्मदेवता के वर से प्राप्त छद्म वेष में एक एक करके गए और विराट राजा के दरबार में काम में लग गए। उनमें से सबसे पहले धर्मराज संत का वेष धारण करके ''कंकुभट'' के नाम से विराट की सभा में पहुँचा। विविध विद्याओं की विशेषताओं एवं पुण्य पुराण कथाओं के बारे में समयोचित तरीके से बताते हुए, अपने पास के विविध पासों से पासे का खेल, खेलकर राजा को खुश करते हुए कंकुभट विराट की सभा में रहने लगा।

मत्स्य देश में ही होना है

अज्ञातवास में पांडवों को पहचानकर उन्हें फिर से वनवास में भेजने के लिए सुयोधन प्रयत्न करता रहा। दादा भीष्म ने बताया कि ''जिस देश

में धर्मसुत रहता हो उस देश में अन्य देशों की तुलना में ज्यादा खुशहाली होगी। वहाँ के लोग धर्म का पालन करेंगे और वह देश संपन्न होगा।'' ये सभी लक्षण विराट राज्य में स्पष्ट दिख रहे थे। यह भी सुनने में आया कि विराट के साला सिंहबल को, जो कि महा बलवान है, एक स्त्री के कारण गंधर्वों ने विचित्र तरीके से मार दिया। सुयोधन को विश्वास हो गया कि सिंहबल को मारने वाला भीमसेन ही होगा और पांडव विराट की सभा में ही हैं।

दक्षिण गोग्रहण

मत्स्य देश के बगल में एक छोटा सा राज्य है त्रिगर्त। उसका राजा सुशर्मा था। दुर्योधन से प्रेरित होकर, उसने विराट राज्य के दक्षिण के गायों को पकड़ लिया। विराट की सेना और त्रिगर्त की सेना के बीच युद्ध होने लगा। विराट की सेना के साथ कंकुभट के साथ रसोई में काम करनेवाला वलल (भीम) अश्वों को देखनेवाला दामग्रंथी (नकुल) और गोपालक तंत्रीपाल (सहदेव) गए। कंकुभट की प्रेरणा में वलल ने भीषण युद्ध किया और विराट के गायों को मुक्त किया। उसके लिए विराट ने कंकुभट को धन्यवाद दिया।

उत्तर गोग्रहण

उत्तर दिशा के गायों को कौरव सेनाओं ने घेर लिया। चूँकि सभी वीर दक्षिण की ओर युद्ध के लिए गए थे, विराट का छोटा बेटा उत्तर कुमार, नाट्याचार बृहन्नला (अर्जुन) को सारथी बनाकर युद्ध के लिए गया। उसके पहले दिन ही अज्ञातवास समाप्त हो गया था। इसलिए अर्जुन ने अपना निजरूप धारण करके कौरवों को जीत लिया और गायों को वापस विराट के राज्य में ले आया।

वाह कितनी सहनशक्ति!

यह सुनकर कि अपना बेटा कौरवों को जीतकर आ रहा है, विराट राजा खुश हुआ और कंकुभट को पासा खलने के लिए बुलाया। पासे का खेल दिलचस्पी से आगे बढ़ रहा था। बार बार कंकुभट बोलने लगा कि उत्तरकुमार के विजय का कारण बृहन्नला ही है। इससे नाराज होकर विराट ने कंकुभट के सिर पर पासे जोर से मारे। घाव से खून निकलने लगा। उस समय मालिनी (द्रौपदी) पास ही थी। उसने अपने अंचल से खून को पोंछा और विराट से कहा कि ''इस महान व्यक्ति के खून की जितने बिंदु जमीन पर पड़ते हों, उस देश में उतने साल सूखा पडेगा।'' कंकुभट अपने दर्द को सहते रहे पर राजा को कुछ नहीं कहा। उस अजातशत्रु का मनोनिग्रह और धर्मशीलता ऐसे हैं।

पाँच गाँव दिए तो भी काफी है

यह जानने के बाद कि कंकुभट ही धर्मराज हैं, विराट राजा को पश्चात्ताप हुआ। अपने किए के बदले में उसने अपनी बेटी उत्तरा का विवाह, अर्जुन के पुत्र अभिमन्यू से कराया। विराट की राजधानी के पास उपप्लाव नामक जगह में धर्मराज ने, अपने बंधु मित्रों के साथ अपनी सभा बनाई। एक ओर युद्ध के लिए सेनाओं को एकत्रित करने के काम चल रहे थे, तो दूसरी ओर राज्य में हिस्से के लिए बातचीत की तैयारियाँ हो रहीं थी।

''कम से कम पाँच गाँव दे दें तो युद्ध नहीं करूँगा'' कहकर युधिष्ठिर ने कृष्ण के द्वारा कौरवों को संदेश भेजा। यह धर्मराज के निर्मल मन और शांति के प्रति उसके प्रेम का प्रमाण है। लेकिन मूर्ख दुर्योधन के जिद्द के कारण युद्ध ही करना पड़ा।

धर्म की ही जीत होगी

धर्मराज की ओर से सात अक्षौहिणी की सेना और दुर्योधन की ओर से ग्यारह अक्षौहिणी सेना युद्ध के लिए तैयार खड़ी थीं। उस समय युधिष्ठिर अपने रथ से उतरकर कौरव सेना के पास गया। दादा भीष्म, गुरु द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, मामा शल्य से युद्ध के लिए अनुमति माँगी। धर्मराज की विनयशीलता से वे अत्यंत प्रसन्न हुए और युद्ध के लिए उसे अनुमति दी।

वापस आकर, रथ में चढ़कर धर्मराज ने अनंत विजय नामक शंख को बजाया। उस शंख की आवाज से पांडव सेना अत्यंत उत्साहित हुई। धर्मज के रथ से बंधी काले दुम वाले चारों घोड़ों ने खुशी से आवाज की। नंद एवं उपनंद नामक दो ढोलों के चिह्नवाला धर्मराज का झंडा आकाश में फडफड़ाने लगा। धर्मराज के रथ के आगे बढ़ते समय निकल रही आवाज मानो ''धर्म की ही जीत होगी'' कह रही थी।

अश्वत्थामा हतः कुंजरः

महाभारत युद्ध में कहीं ऐसा नहीं कहा गया कि धर्मराज ने अपने भाइयों की तरह या उनसे ज्यादा पराक्रम दिखाया है। कारण यह है कि धर्मराज भगवान की शक्ति पर ज्यादा विश्वास करनेवाला है। धर्मराज श्रीकृष्ण को केवल अपना रिश्तेदार नहीं, भगवान विष्णु का अवतार मानता था और उनकी हर बात को आज्ञा समझकर उसका पालन करता था। यह जानते हुए कि वह अधर्म है, अपने दादा भीष्म से पूछना कि ''तुम्हें मारने का उपाय बताओ'' और द्रोण से झूठ कहना कि ''अश्वत्थामा मर गया''- ये दोनों ही इसका प्रमाण है कि वह श्रीकृष्ण की हर बात मानता था।

घर जाओ

युद्ध में कर्ण ने धर्मराज की निंदा की कि ''तुम्हें राजनीति मालूम नहीं है, ब्राह्मण का धर्म ही ज्यादा मालूम है। इसलिए मेरे जैसे लोगों के सामने मत आओ। घर जाओ।'' तब धर्मराज को बहुत दुःख हुआ। लेकिन कर्ण के मरने के बाद, यह जानकर कि वह भी कुंतीपुत्र ही है, उससे भी ज्यादा दुःखी हुआ।

किसी एक को हराया तो

धर्मराज के हाथों मरनेवाले महावीरों में प्रमुख शल्य है। शल्य पर 'शक्ति' का प्रयोग करते समय भी धर्मराज ने भगवान का स्मरण करना नहीं छोड़ा। उनकी भक्ति भावना और विश्वास ऐसे थे। कर्ण का कहना गलत है कि धर्मराज राजनीति नहीं जाननेवाला नहीं था। यह सोचकर कि ''शत्रु शेष'' नहीं रहना है, द्वैपाय नामक तालब में छुपे दुर्योधन को कठोर वाक्यों से उकसाकर, उसे युद्ध के लिए बुलाया। ''हम में से किसी एक को हराओगे तो युद्ध में तेरी जीत मान लूँगा। तब पूरा राज्य तुम्हारा होगा,'' कहकर दुर्योधन को कवच, शिरस्त्राण जैसी चीजे भी दिया। केवल अजातशत्रु ही ऐसी उदारता दिखा सकता है।

दुर्योधन, भीमसेन के साथ गदा युद्ध करने लगा। उस युद्ध में भीम ने दुर्योधन की जांघों पर गदा से प्रहार किया। उससे सुयोधन की जांघे टूट गईं अैर नीचे गिर गया। तब बलराम ने भीम पर चिल्लाया कि वह अधर्म है, पर श्रीकृष्ण ने अपने भाई को समझाया और उसे शांत किया।

बहुत बड़ी गलती की!

टूटी हुई जांघों के साथ नीचे पड़े सुयोधन को भीम ने सिर पर लात मारी। धर्मराज ने भीम को खूब डाँटा कि वह अधर्म है और नीच व्यक्ति

की चेष्टा है। धर्मराज ने दुर्योधन को अपनी चिंता और पश्चात्ताप व्यक्त किया।

धर्मराज्य

''रिश्तेदारों, मित्रों के साथ १८ अक्षौहिणी की सेना युद्ध में बलि हो गई। इसका कारण मैं हूँ''... सोचकर धर्मराज हृदय से व्याकुल हुआ। इसलिए उसने फिर जंगलों में जाना चाहा। तब व्यास, धौम्य आदि बुजुर्गो के कहने पर धर्मराज पट्टाभिषेक के लिए राजी हुआ। सदियों से भरत वंश के चक्रवर्तियों के सिरों पर विराजमान मणिमय मुकुट धर्मराज के सर पर और भी प्रकाशित हुआ।

धर्मराज के धर्मबद्ध पालन में प्रजा भोग भाग्यों के साथ, स्वस्थ एवं संपन्न जीवन यापन करते हुए, उत्तम नागरिक बनकर जीने लगी। अच्छे फसलों से, पशु संपदा से देश सुसंपन्न हुआ और धर्मराज का राज्य दूसरा रामराज्य बनकर प्रख्यात हुआ।

कुरुश्रेत्र में बाणों की शय्या पर लेटे भीष्म के पास जाकर, धर्मराज ने अनेक राजधर्म, लोकधर्म, मोक्षधर्म आदि श्रद्धा से सीखे। श्रीकृष्ण के प्रोत्साहन से अश्वमेधयज्ञ पूरा करके प्रसिद्ध हुआ।

ताऊ और उसके परिवारवालों को कोई कमी न होने देते हुए धर्मराज सभी का आदर से पोषण कर रहा था। इस तरह कुछ समय बीता। धृतराष्ट्र और गांधारी अपना शेष जीवन बिताने जंगल चले गए। कुंती, संजय और विदुर भी उनके साथ गए। वे सब कुरुक्षेत्र की दूसरी ओर स्थित शतयूप राजर्षि के आश्रम में, पर्णशालाएँ बनाकर तपस्या करने लगे।

आत्मानुप्रवेश

उन्हें देखने के लिए धर्मराज अपने परिवार के साथ गया। ताऊ के आश्रम जीवन अच्छी तरह चल रहा था। यह देखकर धर्मराज खुश हुआ। उसने सुना कि विदुर नंगा होकर जंगलों में विचरण कर रहा है। एक दिन दूर से विदुर दिखाई दिया। धर्मराज उसे बुलाते हुए आगे बढ़ा। विदुर एक पेड़ के पीछे खड़ा हुआ। धर्मराज के बुलाने पर विदुर ने एक बार आँख खोलकर उसे देखा। अपने योग बल से विदुर ने अपनी आत्मा धर्मराज के शरीर में भेजा। इससे धर्मराज के शरीर को नई कांति, और बल एवं बुद्धि को नूतन उत्साह प्राप्त हुए।

जब धर्मराज विदुर के शरीर का दहन संस्कार करने के लिए तैयार हुआ, तब आकाशवाणी सुनाई दी कि ''संत के शरीर का दहन संस्कार नहीं करना चाहिए।'' धर्मराज आश्रम में वापस आया और सबको विदुर की बातें बताकर उन्हें आश्चर्यचकित किया। एक दिन वेद व्यास वहाँ आए। उन सबको गंगा तट पर ले जाकर, भारत युद्ध में मृत सभी रिश्तेदारों, मित्रों को दिखाया। धृतराष्ट्र, गांधारी आदि लोग उसे देखकर, अपने शोक को भूलकर, संतुष्ट हुए। धर्मराज हस्तिनापुर वापस आया।

वन की आग में जल गए

कुछ दिन बाद नारद ने आकर धर्मराज को बताया कि धृतराष्ट्र, गांधारी और कुंती वन की आग में जल गए। इस बुरी खबर को सुनकर धर्मराज बहुत दुःखी हुआ। ताऊ एवं माताओं को श्राद्ध समर्पित करके, उन्हें उत्तम पुण्य लोक प्राप्त हों इसके लिए अनेक दान धर्मादि किया।

धर्मराज के पट्टाभिषेक के बाद ३५ वर्ष पूरे हुए। सभी यादवों का आपस में झगड़ा करके समाप्त होना, बलराम कृष्ण का निर्याण, बाकी

बचे लोगों को अर्जुन द्वारा हस्तिनापुर ले आना, द्वारका का समुद्र में डूब जाना आदि अनेक घटनाएँ इस बीच घटित हुईं।

महाप्रस्थान

श्रीकृष्ण की मृत्यु के बाद कलियुग का प्रारंभ हुआ। अब इस लोक में नहीं रहना है, सोचकर धर्मराज ने महाप्रस्थान, यानी अंतिम यात्रा का संकल्प किया। अभिमन्यू के पुत्र परीक्षित को राजा बनाकर, कुलगुरु कृपाचार्य को उसे सौंपा। धृतराष्ट्र के एक और पुत्र युयुत्सु को महानायक बनाया। श्रीकृष्ण के पोते के बेटा वज्र को इंद्रप्रस्थ का राजा बनाया।

कुत्ता साथ आया

हिरण का चमड़ा और जूट के वस्त्र पहनकर, उपवास व्रत शुरु करके धर्मराज, पत्नी द्रौपदी एवं भाइयों के साथ स्वर्ग की यात्रा पर निकल पड़ा। वे सब एक के पीछे एक चल रहे थे। उनके पीछे एक कुत्ता चल रहा था।

पांडव गंगानदी तक पहुँचकर वहाँ से पूर्व दिशा में चलकर पूर्व समुद्र के पास पहुँचे। अग्निदेव ने अर्जुन से वहाँ अपने द्वारा दिए गए गांडीव धनुष को समुद्र में डलवाया। वहाँ से वे दक्षिण की ओर चले और फिर पश्चिम की ओर चलकर, उस जगह पहुँचे जहाँ द्वारका डूब गया था। वहाँ से वे उत्तर दिशा में चले। इस तरह उन लोगों ने भारत की प्रदक्षिणा की और हिमालयों को पार कर चले।

पांडव मेरु पर्वत के पास चल रहे थे। उसके आगे सब देव भूमि थी। इसलिए द्रौपदी, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव एक एक करके नीचे गिर गए। वे लोग किस कमी के कारण गिर गए, वह धर्मराज ने भीम को

समझाया। इस तरह भाइयों के गिरने पर भी धर्मराज दृढ़निश्चय से आगे बढ़ता गया। कुत्ता भक्ति एवं विश्वास के साथ उनके पीछे जा रहा था। कल्पना मात्र से मन को छूने वाला दृश्य है यह।

मुझे स्वर्ग नहीं चाहिए

इंद्र देवलोक से दिव्य रथ ले आया और युधिष्ठिर के सामने रखा। धर्मराज ने उसको नमस्कार किया। इंद्र ने उस रथ पर चढ़ने के लिए कहा। धर्मराज ने कहा ''मेरे भाइयों और द्रौपदी के बिना मुझे स्वर्ग नहीं चाहिए।'' इंद्र ने कहा कि ''वे पहले ही स्वर्ग पहुँच गए हैं।'' धर्मज ने कहा हस्तिनापुर से मेरे साथ विश्वास के साथ यह कुत्ता साथ दे रहा है, इसे भी रथ में चढ़ने दीजिए।'' इंद्र उसके लिए राजी नहीं हुआ। धर्मराज ने कहा- ''तब मुझे स्वर्ग नहीं चाहिए।'' उनकी दया एवं धर्म तत्परता से खुश होकर कुत्ता ने धर्म देवता का अपना असली रूप प्रकट किया। अपने वर से जनमे धर्मराज का उसने अभिनंदन किया।

शरीर के साथ स्वर्ग की यात्रा

धर्मदेव और देवेंद्र ने धर्मराज को रथ में बैठाया। दोनों ओर दिव्य विमान चल रहे थे। ऐसी भव्य यात्रा में उनका स्वर्गरथ आगे बढ़ा। नारद ने यह दृश्य देखकर धर्मराज के सशरीर स्वर्ग यात्रा, जो कि अद्वितीय है, का गुणगान किया।

पहले थोड़ा अनुभव

धर्मराज स्वर्ग गया और अपने सब रिश्तेदारों को देखा। उनको दुःख हुआ कि दुर्योधन आदि स्वर्ग में सुखों का अनुभव कर रहे हैं जब कि उसके भाई नरक में कष्ट उठा रहे हैं। इसलिए वह भी नरक जाना चाहा।

तब देवेंद्र ने धर्मराज को समझाया कि जीव अपने पाप पुण्यों में जो कम है, उसे पहले प्राप्त करते हैं। इस तरह दुर्योधन आदि पहले अपने थोड़े से पुण्य का अनुभव कर रहे हैं और पांडव अपने थोड़े से पाप को पहले भुगत रहे हैं। इस तरह धर्मराज का संशय दूर हुआ।

अजातशत्रु ने आकाश गंगा में नहाकर दिव्य देह को धारण किया। अपने लोगों से मिलकर आनंद प्राप्त किया और उसके बाद वह महात्मा धर्मदेव में अंतर्लीन होकर हमेशा के लिए उज्वल रूप में प्रकाशमान रहा।

धर्मदेवता का स्पष्ट स्वरूप

जिसका जन्म सभी मुनिवरों के लिए आनंदप्रद रहा हो, जिसकी दृष्टि पड़ने मात्र से सारी संपदाएँ प्राप्त हुई हों, जिसके प्रताप ने शत्रुओं के गर्व को नष्ट करनेवाला दीप बनकर प्रकाश दिया हो, जिनके गुणों की चर्चा सप्त समुद्रों से पार चक्रवाल पर्वत तक हुई हो, जिनके चरण अनेक राजाओं के मकुटों के मणियों से देदीप्यमान हों, जो सभी भरत वंशजों में परम धर्मात्मा के रूप में विख्यात हुआ हो, ऐसा पवित्र व्यक्ति सभी लोकों में, सभी युगों में आदर्श रहेगा।

धर्मो विवर्धति युधिष्ठिर कीर्तनेन
पापं प्रणश्यति वृकोदर कीर्तनेन
शत्रुर्विनश्यति धनंजय कीर्तनेन
माद्री सुतौ कथयतां न भवन्ति रोगाः।

धर्मराज का कीर्तन करने से धर्म गुण बढ़ेगा। भीम की प्रशंसा करने से पाप नष्ट हो जाता है। अर्जुन का संकीर्तन करने से शत्रु मिट जाते हैं। नकुल सहदेव की प्रशंसा करने से स्वास्थ्य अपने हाथ रहेगा।

धर्मो रक्षति रक्षित :

मानव जीवन के चार प्रयोजन है - धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष। इन्हीं को ''चतुर्विध पुरुषार्थ'' कहते हैं। उनमें से सर्वप्रथम धर्म है। वह धर्म ही धर्मराज है। दूसरा अर्थ (संपदा) है, वह अर्थ ही अर्जुन है। तीसरा काम (इच्छा) है, वह काम ही भीम है। अर्थ और काम को धर्म के नियंत्रण में रखने से मोक्ष प्राप्त होता है। मतलब मानव का जन्म सफल होता है। इस शाश्वत संदेश को ही धर्मसुत के दिव्य चरित्र से हमें प्राप्त होता है।

'धर्म की रक्षा हम करेंगे, तो धर्म हमारी रक्षा करेगा' इस सत्य का सर्वोत्तम उदाहरण धर्मराज का जीवन है।

* * *